दलित साहित्य ने हमेशा समाज को जोड़ने का काम किया : गायकवाड

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी ने मंडी हाउस स्थित कार्यालय में दो दिवसीय दलित साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। सोमवार को पहले दिन इसमें शामिल मराठी लेखक लक्ष्मण गायकवाड़ ने कहा कि दलित साहित्य मानवता का साहित्य है। दलित साहित्य ने हमेशा समाज को जोड़ने का काम किया है और आगे भी करता रहेगा। दलित साहित्य की भाषा देशी मिट्टी की भाषा है, देश के मूल निवासियों की भाषा है। वह पहले सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे।

साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने सम्मेलन में शामिल साहित्यकारों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत में संतों की लंबी और प्रतिष्ठित परंपरा रही है, जिन्होंने असामनता का लगातार विरोध किया। बाबासाहेब आंबेडकर ने आधुनिक दलित साहित्य को ऊपर लाने के लिए एक बड़े आंदोलन को नई दृष्टि प्रदान की। इस बीच

साहित्य अकादमी द्वारा हाल ही में प्रकाशित पुस्तक गुजराती दलित कविता का लोकार्पण किया गया।

जयदीप सारंगी ने अंग्रेजी और मोहन परमार ने गुजराती भाषाओं में दलित साहित्य की वर्तमान स्थिति और उसकी चुनौतियों पर बात की। मोहन परमार ने कहा कि 47 साल का गुजराती साहित्य 1981 के आरक्षण आंदोलन से एक नई चुनौती पाकर आगे बढ़ा है। सम्मेलन का अगला सत्र कहानी-पाठ का था। ब्यूरो